



ग्रामोभ्युदयादेव – देशोभ्युदय :

साप्ताहिक मौसम पूर्वानुमान आधारित कृषि परामर्श बुलैटिन

[WEEKLY AGROMET ADVISORY BULLETIN]



मौसम पूर्वानुमान प्रयोगशाला : मृदा विज्ञान विभाग : गो० ब० पन्त कृषि एवं प्रौ० वि०वि०, पन्तनगर, उत्तराखण्ड

वर्ष : 16 अंक : 46 अवधि : 12 से 18 नवम्बर, 2007 दिनांक : 13-11-2007

गत सप्ताह (04 से 11 नवम्बर, 2007 तक) के मौसम एवं कृषि सम्बन्धी संक्षिप्त विवरण :-

पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला के आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2007 में इस क्षेत्र में एक जनवरी से 11 नवम्बर, 2007 तक कुल 1730.6 मि०मी० वर्षा हुई है जबकि इस क्षेत्र की औसत सामान्य वार्षिक वर्षा 1433.4 मि०मी० है। इस वर्ष इस क्षेत्र में नवम्बर माह में 11 तारीख तक कोई वर्षा नहीं हुई जबकि नवम्बर माह की इस क्षेत्र की सामान्य औसत वर्षा 3.9 मि०मी० है। गत सप्ताह, इस क्षेत्र में कोई पूर्वानुमानित वर्षा न होने की तुलना में क्षेत्र में कोई वर्षा नहीं हुई; दिन के समय हलकी धुन्ध के साथ आकाश लगभग साफ रहा, रात्री के तापमानों में हलके कुहरे के साथ गिरावट हुई जिससे अधिकतम तापमान 27.0 से 29.0 डि०से०ग्रे० व न्यूनतम तापमान 11.0 से 15.1 डि०से०ग्रे० के मध्य रहे ; अधिकतम आर्द्रता 87 से 93 एवं न्यूनतम आर्द्रता 36 से 62 प्रतिशत के मध्य रही ; हवा 01.4 से 02.9 कि०मी० प्रति घंटे प्रति दिन की औसत गति के मध्य अक्सर प०उ०प० दिशा से बही तथा सूर्य के चमकीले घंटों की संख्या औसतन 00.0 से 08.5 घंटे प्रति दिन के मध्य रही। गत सप्ताह के ऐसे अनुकूल मौसम में कृषकों द्वारा धान की शेष बची फसल की कटाई, मड़ाई एवं सफाई का कार्य सम्पन्न किया, अनाज को सुखाकर भंडारित किया गया तथा अतिरिक्त अनाज बाजार पहुँचाया गया; पर्वतीय क्षेत्रों में सुझावों के अनुसार उचित मृदा नमी की दशा में गेहूँ की बुवाई की प्रारम्भ की गई ; सोयाबीन, उड़द एवं मूँग की पकी फसलों की कटाई-मड़ाई की गई। आलू की 25-30 दिनों की फसल में सिंचाई की गई तथा ओट आने पर यूरिया का बुरकाव कर मिट्टी चढ़ाई गई। लाही सहित सब्जी की फसलों में सिंचाई की गई तथा यूरिया का बुरकाव किया गया ; खाली खेतों की जुताई की गई तथा मृदा परीक्षण कराये गये।

वर्तमान सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान एवं कृषि परामर्श :-

अ : मौसम पूर्वानुमान : भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा पोषित राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, नौइडा एवं आई०एम०डी०, पूना से प्राप्त मौसम आँकड़ों के आधार पर गो० ब० पन्त कृषि एवं प्रौ० वि०वि०, पन्तनगर के मृदा विज्ञान विभाग में स्थित मौसम पूर्वानुमान प्रयोगशाला द्वारा पन्तनगर एवं इससे लगे 150 कि०मी० व्यास क्षेत्रफल में फैले उत्तराखण्ड राज्य के ऊधमसिंहनगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद, रामपुर, बिजनौर, पीलीभीत, शाहजहाँपुर, बरेली एवं बदायूँ जिलों के क्षेत्रों में इस सप्ताह के अगले छह दिनों में औसतन निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की गई है :-

क्र० सं०	पूर्वानुमानित मौसम तत्व	12-11-2007 प्रेक्षित	13-11 - 2007	14-11 - 2007	15-11 - 2007	16-11 - 2007	17-11 - 2007	18-11 - 2007
1.	आकाश में बादलों की दशा	साफ	साफ	साफ	साफ	हलके	हलके	हलके
2.	बारिश की मात्रा (मि०मी०)	00.0	00	00	00	00	05	00
3.	हवा गति (कि०मी० प्रति घंटा)	02.0	2.0	3.0	2.0	2.0	3.0	2.0
4.	हवा की दिशा (कम्पास पौ०)	प०उ०प०	उ०प०	उ०प०	प०उ०प०	प०द०प०	प०द०प०	प०द०प०
5.	अधिकतम तापमान (डि०से०ग्रे०)	27.6	27.6	27.6	27.6	28.6	28.6	27.6
6.	न्यूनतम तापमान (डि०से०ग्रे०)	10.4	10.9	10.9	10.9	10.9	12.9	12.9

ब : साप्ताहिक कृषि परामर्श :- इस सप्ताह इन क्षेत्रों में आकाश में हलके से बादल छाये रहने, दिन व रात्री के तापमान कम रहने से ठन्ड का प्रकोप बढ़ जाने, सुबह के समय हलका कुहरा छाये रहने, अधिकतर उत्तर-पश्चिम दिशा से कम गति की हवा बहने एवं इस सप्ताह के अन्त में इन क्षेत्रों में हलकी बूदाबाँदी होने की भी संभावना है। ऐसे अनुमानित मौसम में गो० ब० पन्त कृषि एवं प्रौ० विश्वविद्यालय, पन्तनगर के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इन क्षेत्रों के कृषक भाईयों को अपने खेतों में खड़ी इस मौसम की विभिन्न फसलों, फलदार वृक्षों, सब्जियों एवं पालतू पशुओं में इस सप्ताह निम्न सुझाये कार्यक्रमों को अपनाने की सलाह दी जाती है :-

1. गेहूँ :- मैदानी क्षेत्रों में इस सप्ताह से गेहूँ की बुवाई हेतु अनुकूल तापमान रहने तथा हलकी बूदाबाँदी होने की संभावना है अतः मैदानी क्षेत्रों के कृषक भाई खेतों में उपयुक्त मृदा नमी की दशा में इस सप्ताह से गेहूँ की बुवाई प्रारम्भ कर दें । ध्यान रखें कि कम नमी की दशा में बुवाई कदापि न करें क्योंकि इससे बीज

के जमाव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस सप्ताह बुवाई हेतु गेहूँ की अधिक पैदावार देने वाली किस्मों जैसे यू0पी0-2338, यू0पी0-2382, पी0बी0डब्लू0-343, डब्लू0एच0-542, एच0डी0-2687 आदि में से ही किसी के प्रमाणित बीज का चयन करें। देशी हल या ट्रैक्टर चालित फरो ओपनर की सहायता से 23 सें0मी0 की दूरी पर कूड़ बनाकर 40 कि0ग्रा0 बीज प्रति एकड़ की दर से बुवाई करें, बीज की गहराई 5 सें0मी0 से अधिक न हो, अधिक उपज प्राप्त करने हेतु सन्तुलित उर्वरकों का देना बहुत आवश्यक है अतः बुवाई के समय मृदा परीक्षण के आधार पर 24 कि0ग्रा0 नत्रजन देने हेतु लगभग 50 कि0ग्रा0 यूरिया, 24 कि0ग्रा0 फास्फोरस देने हेतु 150 कि0ग्रा0 सिं0सु0फा0 ; 16 कि0ग्रा0 पोटाश देने हेतु 30 कि0ग्रा0 म्यूरैट आफ पोटाश तथा जिंक तत्व की कमी की दशा में 10 कि0ग्रा0 जिंक सल्फेट प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में मिलायें जिससे कि अच्छे बीज जमाव के साथ फसल की उचित बढ़वार हो सके, बुवाई के तुरन्त बाद पटेला लगायें जिससे कि जमाव हेतु उचित मृदा नमी संरक्षित रह सके। जो किसान भाई घर का बीज बो रहे हैं उन्हें सलाह दी जाती है कि वे बीज के समय से अच्छे जमाव हेतु तथा बाद में फसल को खुला कन्डुआ, गेरुई या झुलसा आदि रोगों से बचाने हेतु किसान भाई बीज को ढाई ग्राम थीरम प्रति कि0ग्रा0 बीज की दर से उपचारित कर ही बोयें। जिन खेतों में बुवाई हेतु मृदा नमी कम हो उनमें हलकी बूँदाबौंदी होने के बावजूद भी इस सप्ताह पलेवा कर दें। पर्वतीय क्षेत्रों के किसान भाई सिंचित दशा में गेहूँ की वी0एल0-719, वी0एल0-738 या एच0डी0-2380 में से किसी किस्म के प्रमाणित बीज की बुवाई 2 कि0ग्रा0 बीज प्रति नाली की दर से इस सप्ताह भी कर सकते हैं।

2. दलहनी फसलें :- चना एवं मटर की बुवाई हेतु भी इस सप्ताह अनुकूल मौसम रहने की संभावना है अतः खेतों की जुताई कर तैयारी करें लेकिन ध्यान रखें कि बीज के अच्छे जमाव हेतु आवश्यक नमी बनाये रखने हेतु प्रत्येक जुताई के बाद पटेला अवश्य लगायें, कम नमी की दशा में पलेवा करके ही बुवाई करना अधिक लाभकारी होगा। बीज की दर 30 कि0ग्रा0 प्रति एकड़ एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 से 45 सें0मी0 ही रखें। बुवाई के समय 20 कि0ग्रा0 यूरिया तथा 120 कि0ग्रा0 सिं0सु0फा0 प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में मिला दें। यदि घर का बीज बो रहे हों तब बीज के अच्छे जमाव एवं फसलों को बीमारियों से मुक्त रखने हेतु बुवाई से पूर्व बीज को दो ग्राम थाइरम तथा एक ग्राम बाविस्टीन फफूँदीनाशी प्रति कि0ग्रा0 बीज की दर से उपचारित कर लें, साथ ही फसल द्वारा वायुमण्डलीय नत्रजन के स्थिरीकरण हेतु इसी बीज में 200 ग्राम राइजोबियम कल्चर का एक पैकेट प्रति 10 कि0ग्रा0 बीज की दर से अवश्य मिलायें। पहले बोई इन फसलों में निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकालें। अरहर की फसल में फलियाँ बनने हेतु भी यह मौसम अनुकूल रहेगा।

3. मृदा प्रबंधन :- आगामी रबी मौसम की विभिन्न फसलों की बुवाई से पूर्व अपने खेतों की आधा कि0ग्रा0 मिट्टी का नमूना कपड़े की साफ थैली में भरकर मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में परीक्षण करवायें, धान की कटाई के बाद खाली हुये खेतों में हैरो तथा कल्टीबेटर चलाकर जुताई करें तथा कम नमी वाले खेतों में पलेवा करें।

4. फल एवं सब्जियाँ :- आम के बागों में जुताई करें जिससे खरपतवार नियंत्रित होने के साथ-साथ अच्छी फलत हेतु मृदा की भौतिक दशा में सुधार होगा। लीची, अमरुद एवं नीबूवर्गीय फलों के बागों की नर्सरी, नये एवं पुराने बागों के थालों की इस सप्ताह गुड़ाई कर हलकी सिंचाई करें। आलू की पहले बोई फसल यदि 20 से 25 दिनों की हो गई हो तब हलकी सिंचाई इस प्रकार करें कि पूरी मेंड़ पानी में न डूबे तथा इसके बाद ओट आने पर 20 से 25 कि0ग्राम यूरिया पंक्तियों के बीच में समान रूप से डाल कर मिट्टी चढ़ा दें। जो किसान भाई आलू की बुवाई अभी न कर पाये हों वे आलू की अधिक पैदावार लेने हेतु सफेद कन्दों वाली मुख्य किस्मों जैसे कुफरी सतलुज, कुफरी पुखराज, कुफरी जवाहर, कुफरी चिपसोमा-1, कुफरी चिपसोमा-2 आदि में से किसी प्रजाति के प्रमाणित बीज का चुनाव कर इस सप्ताह बुवाई समाप्त कर लें।

5. पशु पालन एवं प्रबंधन :- चूँकि इस सप्ताह से ठण्ड का प्रकोप प्रारम्भ हो गया है अतः पशुपालक भाई सभी प्रकार के पशुओं को इस सप्ताह से अन्दर बाँधना प्रारम्भ कर दें। यह भी ध्यान रखें कि ऐसे मौसम में पशुओं के नवजात शिशुओं में एस्कैरिस कीड़े की संक्रामकता अधिक बढ़ जाती है क्योंकि इसके कीटाणु माँ के पेट से ही बच्चों में चले जाते हैं जिसके कारण नवजात शिशुओं की बढ़वार रुक जाती है, उन्हें दस्त लग जाते हैं, बाल रूखे होकर गिरने लगते हैं तथा पेट व पीठ पर चकत्ते पड़ने लगते हैं अतः ऐसे लक्षण दिखाई देने पर पशुपालक भाई प्रभावित बच्चों को 50 ग्राम सरसों या राई के बीज या 50-60 ग्राम नीम के पत्तों को पीसकर लगभग 100 मि0ली0 मट्ठे में मिलाकर दिन में दो बार पिलायें, किन्तु यदि इससे भी लाभ न हो तब पिपराजीन 60 मि0ली0 या पेनाक्योर 350 मि0ग्रा0 की एक खुराक केवल एक बार पिलायें। स्वच्छ पानी पिलायें।